एस. एस. कॉलेज, जहानाबाद।
विभाग - हिन्दी
विषय - 'चन्द्रगुप्त' नाटक
कक्षा - स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा भाग - 1.
शिक्षण माध्यम - गद्य - रूप
समय - 11 बजे से 12 बजे तक, 14.10.20
शिक्षक - डॉ. रमेश शर्मा
पाठ - नाटक की व्याख्येय पंक्तियाँ

प्रिय छात्र - छात्राएँ !

आज की व्याख्येय पंक्तियाँ निम्न हैं ——

" वहीं मैं सिन्धु की रहनेवाली हूँ, आर्य। वहाँ युद्ध - विग्रह नहीं, न्यायालयों की आवश्यकता नहीं। प्रचुर स्वर्ण के रहते भी कोई उसका उपयोग नहीं। इसलिए अर्थमूलक विवाद कभी उठते ही नहीं। मनुष्य के प्राकृतिक जीवन का सुन्दर पालना मेरा सिंधु-देश है।"

प्रस्तुत पंक्तियाँ नाटककार जयशंकर प्रसाद रचित 'चन्द्रगुप्त' नाटक के द्वितीय अंक के चतुर्थ दृश्य से उद्धृत हैं। ये पंक्तियाँ नाटक में मालविका के कथन हैं। इसमें सिन्धु प्रदेश की महत्ता बतलायी गई है। सुनने में आज यह विचित्र जैसा लग रहा है कि सिन्धु प्रदेश में अर्थमूलक कोई विवाद नहीं उठता।

नाटक में यह प्रसंग उस समय उपस्थित होता है जब पर्वतेश्वर के साथ सिकन्दर का युद्ध होनेवाला है। सिंहरण, अलका, कल्याणी (छद्म पुरुष वेश में), चन्द्रगुप्त, चाणक्य सभी प्रच्छन्नतः पर्वतेश्वर की सहायता के लिए पहुँचते हैं,

इसी माहौल में चन्द्रगुप्त और मालविका एकान्त में मिलते हैं। युद्ध के लिए तत्पर सम्पन्न सैनिकों की तैयारियों का भी वह लेखा-जोखा लेता है। इसी समय थोड़ी शान्ति के लिए वह मालविका से कहता है — तुम्हारे नागकेसर की क्यारी कैसी हरी-भरी'। आज कुछ खेल भी होगा, देखोगी! तुमको आना आता है-मालविका कहती है खेल तो नित्य ही देखती हूँ, न जाने लोग कहाँ से आते हैं और अभिनय करते हुए चले जाते हैं। मालविका कहती है — युद्धकाल है, देश में रण चर्चा छिड़ी है। आजकल मालव-स्थान में कोई आता-जाता नहीं है। इसी चर्चा वह यह भी कहती है कि मालव में बहुत ही भोले मेरे देश के विपरीत है, इनकी युद्ध पिपासा बलवती है। इसी बात पर चन्द्रगुप्त कहता है तो क्या तुम मालव के नहीं हो - मालविका कहती है — मैं सिन्धु की रहनेवाली हूँ, आर्य। वहाँ युद्ध-विग्रह नहीं, न्यायालयों की आवश्यकता नहीं'।

मालविका की उपर्युक्त उक्ति सिन्धुप्रदेश की जो छवि प्रस्तुत करती है वह भारत की आदर्श छवि ही है। अलबत्ता समग्र प्रदेश तो सिन्धु रहा ही है। नाटकीय दृष्टि से इस तरह के कथन का नाटक के मुख्य कथानक से कोई मेल तो नहीं खाता न ही तात्कालिक युद्ध की स्थितियों से कोई मेल या उपयोगिता सिद्ध होती है, पर मालविका के स्वभाव का उद्घाटन युद्ध-रत चन्द्रगुप्त के लिए राहत देनेवाली है। दरअसल मालविका का भी अनुराग चन्द्रगुप्त से यहाँ प्रदर्शित होता है।

[illegible]
14.10.20